हरियाणा-पंजाब कृषि विचिलन

चर्चा में क्यों?

हरियाणा की कृषि अपनी फसल विविधीकरण के कारण पंजाब से अलग है, जबकि पंजाब में चावल-गेहूँ की एकल कृषि पर्यावरणीय और वित्तीय दृष्टि से सतत् नहीं है।

प्रमुख बिंदु:

- **पंजाब:**
  - **एकल कृषि फसल:** पंजाब की कृषि की विशेषता चावल-गेहूँ की एकरूपता है, जहाँ किसान **क्रमशः खरीफ (मानसून) तथा रबी (सर्दी-वसंत) मौसम के दौरान केवल इन दो फसलों को उगाते हैं।**
    - चावल की कृषि का क्षेत्रफल 2014-15 में 28.9 लाख हेक्टेयर (एलएच) से बढ़कर 2023-24 में 31.9 लाख हेक्टेयर हो गया।
  - **उत्पादन रैंकिंग:** पंजाब भारत में गेहूँ और चावल दोनों के उत्पादन में **तीसरे स्थान** पर है।
    - भारत में गेहूँ उत्पादन में आठ प्रमुख राज्य शामिल हैं, जबकि चावल उत्पादन में 16 राज्य शामिल हैं।
  - **जल एवं पर्यावरण संबंधी मुद्दे:** चावल एक जल-गहन फसल है और इसे लगभग 25 बार सिंचाईयों की आवश्यकता होती है, जबकि गेहूँ को केवल 4-5 बार की सिंचाईयों की आवश्यकता होती है।
    - अत्यधिक चावल उत्पादन से भूजल स्तर में कमी आती है तथा **अनाज की खरीद और भंडारण की राजकोषीय लागत बढ़ जाती है।**
- **हरियाणा:**
  - **न्यूनतम एकल कृषि:** हरियाणा में पंजाब की तुलना में अधिक विविध फसल पद्धति है, जिसमें चावल-गेहूँ की एकल कृषि से परहेज़ किया जाता है।
    - **खरीफ मौसम:** इसमें **चावल, कपास, बाजरा और ग्वार** शामिल हैं।
    - **रबी मौसम:** इसमें गेहूँ, सरसों, चना और सूरजमुखी शामिल हैं।
  - **चावल की किस्में:** हरियाणा में बासमती चावल क्षेत्र का 56.2% हिस्सा है (2019-20 से 2023-24)।
    - बासमती चावल **गैर-बासमती किस्मों की तुलना में कम जल की खपत करता है।**
    - बासमती की कृषि जुलाई में की जाती है, जिससे मानसून और ठंडे तापमान का लाभ मिलता है तथा इसकी खुशबू बढ़ जाती है।
  - **नहर नेटवर्क: 1,594 चैनलों** का विस्तृत नहर नेटवर्क, **14,814 किमी. लंबा है।**
    - यह हरियाणा के पूर्वोत्तर, मध्य और उत्तर-पश्चिमी ज़िलों को सिंचित करता है।
    - दक्षिणी ज़िलों (चरखी दादरी, झज्जर आदि) में सिंचाई की सुविधा सीमित है।
  - **फसल वितरण:**
    - **दक्षिणी हरियाणा:** किसान आमतौर पर खरीफ में बाजरा, ग्वार और ज्वार तथा रबी में गेहूँ, सरसों, चना एवं जौ उगाते हैं।
  - **चुनौतियाँ:**
    - **चावल का क्षेत्रफल बढ़ा: वर्ष** 2024 में चावल की कृषि का रिकॉर्ड स्तर, 16.4 लाख हेक्टेयर में रोपण।
    - इस वृद्धि के कारण **कपास की कृषि** के क्षेत्रफल में कमी आई है (4.8 लाख हेक्टेयर)।
      - कम कीमतों और पिंक बॉलवर्म कीट के हमलों के कारण 2023 में कपास का रकबा 6.7 लाख हेक्टेयर से कम हो जाएगा।
  - **विविधीकरण प्रयास: फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने** के लिये भावांतर भरपाई योजना (BBY) के तहत प्रयास।
    - **बाजरा, सरसों, सूरजमुखी और अन्य फसलों** के लिये MSP खरीद एवं मूल्य कमी भुगतान।

//

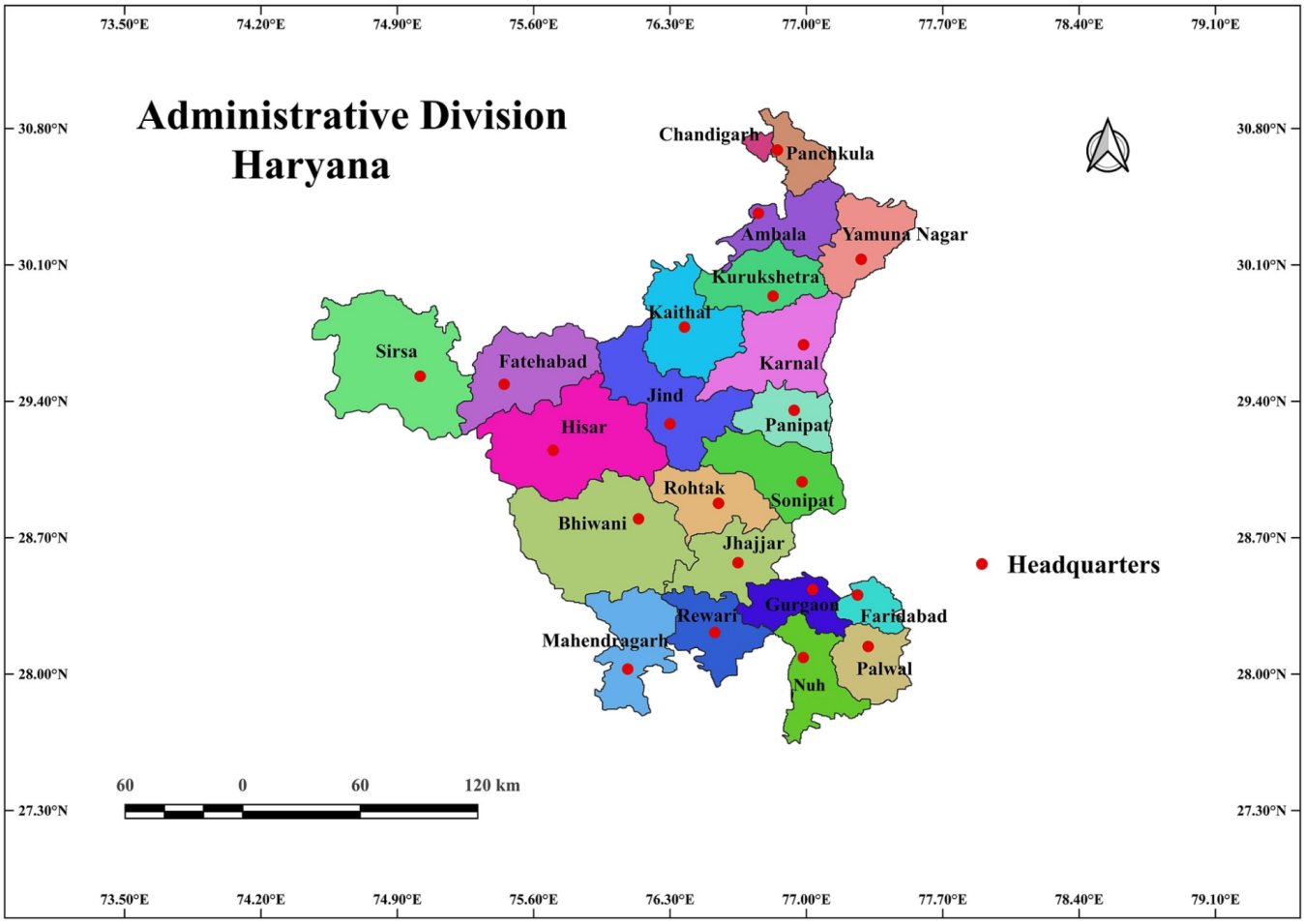

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/haryana-punjab-agricultural-divergence